परंपरा

जनकविताक कालजयी शिल्प : भगैत

।। परिचय : रामबहादुर रेणु।।

।। पाठ : बद्री पँजियार, बीजो मरर, भूमी सदा।।

भगैत मिथिलाक एक अद्‌भुत धार्मिक ग्राम्य–गायन–शैली थिक। एहि मे नाट्य–तत्त्व सेहो पाओल जाइछ। एकर भाषा मैथिली थिक। मानल जाइछ जे एहि प्रकारक गायन आ एहि मे समाहित नाट्य–तत्त्वक आरम्भ 19 म शताब्दी सँ पूर्वहि भेल छल। भगैत, जकरा भगतै सेहो कहल जाइछ, एक पारंपरिक लोक–शैली थिक। एकर आयोजन मिथिला मे पूजाक रूप मे होइत अछि। आधुनिक बुद्धिजीवी ग्राम्य–जीवनक एहि अटूट विश्वास आ धार्मिक प्रयोजन कैँ मनोरंजनक एक साधन मानै छथि, मुदा मिथिलाक ग्रामीण जन कैँ भगैत मे अपन देवपुरुषक अप्रत्यक्ष रूप सँ उपस्थित हेबाक पूरा विश्वास रहै छनि आ ई आयोजन भक्तिभाव आ सात्विक मानसिकता सँ कएल जाइत अछि। स्वच्छता आ पवित्रताक सीमा धरि एहि शैली कैँ अपन प्रयोजनीयता बनौने राखल देखल जा सकैछ। मिथिलाक अलावे भगैत नेपाल आ पश्चिम बंगालक कतिपय क्षेत्रक ग्राम्य–जीवन मे अपन लोकप्रियता काएम कएने अछि।

भगैतक कथ्य पूर्णरूपेण धार्मिक शब्दावली आ भावना सँ ओतप्रोत होइत अछि। एहि मे ओहि महापुरुष लोकनिक गाथा गाओल जाइछ जे अपन जीवनकाल मे अद्‌भुत क्रियाकलापक माध्यम सँ अपन महत्ता काएम केलनि आ अपन जन्म कैँ सार्थकतापूर्वक अलौकिक बना देलनि। ओ लोकनि अपन प्रभुत्व आ पराक्रम सँ समाजी लोकनि कैँ जीवन–दान देलनि, कष्ट सभक निवारण केलनि, अपन योगबल आ सत्यवचनक कारण अनुकरणीय आ प्रशंसनीय बनलाह। हुनका लोकनिक परीक्षा देवता लोकनि धरि लेलनि आ अनेक प्रकारक वरदान देलखिन। एहि महापुरुष लोकनिक जीवन परम दृढ़ आ आमजन सँ एहि अर्थ मे भिन्न रहलनि जे ओ लोकनि समस्त जगतक दुर्भावना कैँ त्यागि जगत–कल्याण मे अपन सम्पूर्ण जीवन व्यतीत क' देलनि। ओ लोकनि पहिने तँ अनुकरणीय बनलाह आ तत्पश्चात हिनका लोकनिक गाथा जगह–जगह गाओल जाए लागल। एही क्रम मे एहि गाथा कैँ गायनक स्वरूप भेटल आ ओ लोकनि देवपुरुषक रूप मे स्मरण कएल जाए लगलाह। भगैत सँ जुड़ल

समाजी हिनका लोकनि कैं अपन देवता आ पूर्वज दुनू मानै छथि। एहि प्रकारक देवपुरुषक संख्या दू दर्जन सँ बेसी अछि। धर्मराज, ज्योति, कारू महराज, बेनी, बिसहैर, खिरहैर, कालीबंदी, बरहम, हरिया डोम, गहील, अन्दू बाबा, मीरा साहेब आदि देवपुरुषक जीवन–गाथा भगैतक गायन के मुख्य आधार थिक।

भगैतक तीन अंग मानल जा सकैत अछि – (1) गायन (2) नाट्य आ (3) दर्शक। एहि प्रकारक आयोजन मे संवाद कैं गाबि क' प्रस्तुत कएल जाइछ, मुदा बीच–बीच मे गद्य मे सेहो अभिव्यक्ति होइत अछि। भगैतक गीत सभक कोनो लिखित प्रमाण नहि अछि। भगैत –मंडली ओकरा अपना तरहें तैयार क' क' प्रस्तुत करैत अछि। मंडली मे जे आगाँ–आगाँ गबैत अछि, ओहि व्यक्ति कैं पँजियार कहल जाइछ। बाँकी गायक सभ भगैतिया कहबै छथि। भगैतक गीत–गायन–गति तेज तथा सुर ऊँच होइत अछि। एकर संगीत अति तीव्र आ कोलाहल उत्पन्न करबाक संगहि विशिष्टप्रभावी सेहो होइत अछि। संगीत आ ध्वनि–प्रभावक हेतु ढोलक, झालि, खँजरी, डुगडुगी आदिक प्रयोग कएल जाइछ। सम्पूर्ण गायन–प्रक्रिया धार्मिक भाव मे सम्पन्न होइत अछि।

ओना तँ नाटकक अभिप्राय वास्तविकताक भ्रम उत्पन्न करब थिक, मुदा भगैतक नाट्य कैं सम्बन्धित व्यक्ति लोकनि वास्तविक मानै छथि। हुनका लोकनिक दृष्टि मे सन्देह करब बड़ भारी पाप थिक । हुनका लोकनिक मानसिकता एक खास तरहक मजगूत विश्वास सँ सराबोर रहैत छनि। संसार भरि मे कम्मे शैली प्रायः एहन हएत जकरा प्रति एहन अटूट विश्वास आ दृढ़ धारणा देखल जाइत हो ।

आयोजनक समय भगैतिया लोकनि कोनो पवित्र स्थान कैं कार्यक्रमक हेतु चुनि क' गोलाइ मे बैसै जाइ छथि । पँजियार गोलाइक अंदर बैसैत छथि। आयोजनक दौरान जाहि व्यक्तिक शरीर मे वर्णित देवपुरुषक प्रवेश होइछ, ओ भगता कहबैत छथि। भगैत शुरू भेला पर भगैतिया लोकनि बीच–बीच मे अपन कान मे अङुरी द' क' बहुत ऊँच स्वर साधै छथि, जाहि सँ एक विशिष्ट प्रकारक मुद्रा बनैत अछि। गायनक क्रम मे भगताक शरीर मे वर्णित देवपुरुषक प्रवेश होइछ तँ भगताक शरीर कांपए लगैत अछि, क्रियाकलापक छटा अलौकिक आ असामान्य भ' जाइत अछि। ओ देवपुरुषक रूप मे अपन व्यवहार अभिव्यक्त करए लागैत छथि। हुनका आँगू मे धूप–दीप, अक्षत–बेलपात, फल–फूल– मधुर आदि राखल रहैत अछि । उपस्थित जन–समूह कैं भगता भभूत, तुलसीपत्र, बेलपात, फूल आदि द' क' कल्याणक आश्वासन दृढ़तापूर्वक दै छथि । कोनो–कोनो भक्त सँ ओ अपन अप्रसन्नता सेहो व्यक्त करै छथि आ कानए सेहो लागै छथि। उपस्थित दर्शक ओहि काल भगता कैंअपन देवपुरुषक रूप मे देखै छथि। मानल जाइछ जे भगताक लेल योग आ उपासनाक विशेष महत्त्व होइत अछि। देवपुरुषक रूप मे अपन विश्वसनीयता देखेबाक हेतु भगता अपना मुँह मे आगिक गोला ल' लै छथि, दीपक आंच मे अपन जीह तपाबै छथि, हाथ मे अंगोरा ल' क' खेलै छथि, आगि पर चलै छथि। एहि प्रकारक अद्भुत ओ रोमांचक क्रिया प्रायः प्रत्येक भगैत– कार्यक्रम मे देखबा

मे अबैत अछि। ई सभ बात असत्य प्रतीत भ' सकैछ, मुदा एहन होइत अछि। ई चाहे ओहि व्यक्तिक शारीरिक–मानसिक कारण सँ होइत हो अथवा आन कोनो अज्ञात कारण सँ।

भगैतक आयोजन मे उपस्थित श्रोता आ दर्शक भक्तक रूप मे आनन्द प्राप्त करैत छथि। ओ आत्मिक शान्तिक अनुभव करै छथि। भगैत मे दर्शक एकर अंग बनि जाइछ। एहि शैलीक एक फूट विशेषता ईहो थिक जे एहि मे दर्शकक उपस्थितिक अनिवार्यता नहि अछि। विना एको दर्शकक सेहो भगैत घंटो धरि चलैत रहैत अछि। जँ दर्शक अछि तँ सेहो भगैत मे अपन सहभागिता काएम करैत छथि आ एहि समूचा प्रक्रिया मे दर्शक दर्शक नहि 'परफार्मर'क रूप मे संलग्न भ' जाइत छथि। भगताक प्रदर्शन मे मुख्यतः दर्शक आ भगताक बीच गद्य–संवाद चलैत अछि। तखन दर्शक भक्त आ भगता देवताक रूप मे होइत छथि ।

गायनक ई आश्चर्यजनक शैली अद्‌भुत रूप सँ जाति–वर्ण सँ ऊपर उठि क' अपन अस्तित्व काएम केने अछि। ई एक पारंपरिक, धार्मिक, उच्च, भावुक, पवित्र संवेदनाक शिष्ट रूप थिक। भगैत–मंडली मे कोनहु वर्गक, धर्मक, जातिक लोक शामिल भ' सकै छथि। ज्ञातव्य हो कि भगैतक देवपुरुष लोकनि मे डोम जातिक हरिया डोम आ मुसलमान सम्प्रदायक मीरा साहेब सेहो छथि। भगता लोकनि एहि मे सँ कोनो ने कोनो देवपुरुषक उपासक होइतहि छथि । भगैत–गायकक रूप मे मुनेश्वर यादव, नटाय पँजियार, भोलन यादव, दुखीचन्द यादव, रेवती भगता, अर्जुन यादव, बेनी साह आदि प्रख्यात छथि। हिनका लोकनिक स्वर अत्यन्त मधुर आ सधल–साधल होइत छनि। पारिश्रमिक ल' क' कार्यक्रम प्रस्तुत करबाक व्यावसायिक रेबाज हिनका लोकनि मे नहि छनि।

सांस्कृतिक दृष्टिकोण सँ भगैत गायनक एक प्राचीन शैली थिक। भगैतक धुन आ ताल कैँ वर्त्तमान रंगमंच–सन्दर्भ सँ जोड़बाक कोनो प्रयास एखन धरि नहि कएल गेल अछि। विभिन्न पारंपरिक शैलीक अनुकरण कए रंगमंच अपन खूब समृद्धि केलक अछि, मुदा भगैत–सन गायन–शैली, जाहि मे नाट्यतत्त्व तँ अछिये, कन्सन्ट्रेशनक चरम बिन्दु सेहो अछि, कैँ आत्मसात कए एक नवीन प्रयोग आ नवीन कल्पनाक चेष्टा धरि एखन तक नहि भेल अछि। भगैत पर आइ धरि किछु खास लिखलो नहि गेल अछि। आइ आधुनिकताक चद्दरि तते नमरि गेल अछि जे ई अद्‌भुत शैली अपन अस्तित्व आ अस्मिता कैँ ल' क' चिन्तित अछि। संभव अछि जे दस बरखक बाद भगैत गौनिहार क्यो नहि बचय आ ई अद्‌भुत लोक गायन शैली लुप्ते भ' जाय।

भगैतक अध्ययन क' क' हमरा लोकनि अपन सांस्कृतिक धरोहर आ अस्मिताक पहचान मे एक आर कड़ी जोड़ि सकैत छी। एकर विस्तृत सन्दर्भक खोज कए आधुनिक रंगमंच लेल एकर उपयोगिता बहार क' सकै छी। भगैतक देवपुरुष लोकनि पर नाट्यालेख तैयार करा कए तकरा वर्त्तमान सामाजिक सन्दर्भ मे व्यापक आयाम देल जा सकैछ। तखन भगैतक लुप्तीकरण–प्रक्रिया तँ रुकबे करत, भारतीय रंगमंच कैँ एक नवीन संस्कार सेहो प्राप्त हएत।

भगैत

।। मीरा साहेबक भोजन-प्रसंग।।

बरबा बर गै खसीया कनिञा कैँ नोतैए ने गौ
छोट गे मुरगा दुलहिन गे हलाल केलकैए
कनिञा परचा गोस लेलकै दुलहिन गै बनाय
हे गै रचिये रचि कए कनिञा बनाबए लागलैए
कनिञा जे बनबैए खाना छप्पन परकार ने गौ

किछु जोगे मगन सै भुजिया कनिञा जे भुजाइए लेलकै
दुलहिन जे काबाब बनेलकै ने गौ
किछु जोगे गोस के सिरुआ झोर झोड़ाइए लेलकै
बनाइए लेलकै कनिञा खाना छप्पन परकार ने गौ

ऐसन–ऐसन खाना कनिञा डिल्ली मे बनाबए लागल ने
कनिञा के खाना सौरभ करैए डिल्ली गमागम
खाना जे गे बनाए गए कनिञा जोगे तैयार भेलै
कनिञा गे रिकमी दुलहिन खाना लेलकै परोसि ने गौ

बधना जोगे मे गंगाजल दए कए उठाय लेलकै
कनिञा जोगे खाना कैँ रूमाल सँ गे झँपाय लेलकै
खाना उठाए कए कनिञा तरहथ पर लेलखिन उठाय ने गौ
दुलहिन बधना के जल हाथ मे लेलखिन लगाय ने गौ
चलिये जोगे देलखिन रिकमी स्वामी जी के रनवास ने गौ

सासू जी के जे मोन दुलहिन कैँ पड़ि गेलै हौ भइया
मोने–मोने दुलहिन करैए विचार ने गौ
पहिने जे खाना हम्में सासूजी कैँ खिलाय लेबै
हो खोदाइ बाबा, तऽब जेबै स्वामी जी के रनवास ने गौ

सासूजी के खाना कनिञा परोसि लेलकै हौ भइया
खाना लेलकै जोगे रूमाल सँ झँपाय ने गौ
बधना के जल कनिञा हाथ कैँ लगाय लेलकै
चलिये देलकै सासूजी के रनबास ने गौ

रमकल झमकल कनिञा चलि देलकै हौ भइया
चलिये देलकै सासूजी के रनवास ने गौ
कनिञा के बेबहार बीबी देख लेलकै हौ भइया
मामा हँसैए मोने–मोन मुसुकाइ ने गौ

मामा कैँ हँसैत कनिञा देख लेलकै हौ भइया
लाज सँ सरमेलै कनिञा सरमाइए गेलै ने
की ए मामा टांग–पीठ उघार देखलक हौ भइया
की ए देखलक कुलच्छन बेबहार ने हो

मोने मोन सोचैत दुलहिन चलि देलकै हौ भइया
चलिये देलकै सासू जी के रनबास ने हो
घड़िये पलक मे दुलहिन जूमि गेलै हौ भइया
जुमिये गेलै सासू जी के हजूर मे हो

बोलिया बोलैऐ कनिञा बोलै छै हौ भइया
दुलहिन जोगे सासू जी कैँ समझाइ ने हो
एक रिकमी खाना बीबी पाबि लहो हौ भइया
खाना केरी सौरभ तोंहें पाबि लहो हे मामा
तऽब जेबै बियहुआ केरी रनबास ने हो

कनिञा के कहनिञा मामा सूनि लेलकै हौ भइया
तरबा के गोस्सा मगजिया चढ़ि गेलै ने हो
बोलिया बोलैए मामा बोलै लागले हौ भइया
दुलहिन कैँ कहैए जोगे समुझाय ने हो

छोटका खन्दान के बेटी छोटहा छें गै कनिञा

छोटे सन तोर बूधि आ गियान छौ गे की ?
तोहरा जे राज मे हे दुलिहिन उनटल की बेबहार होइ छौ
औरत के जूठ खाना मरद खाइ छौ गे की ?

।। गहीलक्र शिकार–कथा।।

कौने बोन बोलै मैया कारी कोइलिया हे
मैया, कौने बोन बोलै छै हे मजूर
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

बाबा बोन बोलै मैया कारी कोइलिया हे
मैया, भैया बोन बोलै छै हे मजूर
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

कथी केरी तिरबा मैया कथी के धनुषिया हे
मैया कौने बोने खेलबह आ हे शिकार
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

सोना केरी तिरबा मैया रूपा के धनुषिया हे
मैया, बीजू बोन खेलबह आ हे शिकार
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

एक कोस गेलह मैया दुइ कोस गेलह हे
मैया, तीने कोस बीजू बोन हे शिकार
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

एक बोन जोहलह मैया दुइ बोन जोहलह हे
मैया, तीने बोन जोहलह आ हे शिकार
जगदम्बा मैया राज घुमती हे
हरीनो ने मारह मैया बघबो ने मारह हे
भैया, बीछि–बीछि मारै छह हे मजूर

जगदम्बा मैया राज घुमती हे
हकलो जे कानै मैया बोन के मजुरनी हे
मैया, भरला भेस हरलह आ हे सिनूर
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

बकसह बकसह मैया सीथ के सिनुरबा हे
मैया, भरला भेस हरह नै हे सिनूर
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

जब हम्में आ गे मजुरनी सिनुर बकसबौ गै
मजुरनी, की ए देबै हमरा कैँ इलाम ?
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

जब तोहेँ आ हे मैया सिनुर बकसबह हे
मैया, भरी राति नाच हम्में देखाएब
जगदम्बा मैया राज घुमती हे

।। धर्मराज–जोतिक–संवाद : जोतिक के लिलसा।।

माया केर जे मायारूपिया केने
माया के केलखिन दैव हौ विस्तार
अपन रूप कैँ छोड़ैए हौ अनरूपिया
धए लेलकै ब्राह्मन केर हौ सरूप
आठो अंग सँ शरीर मे अनरूपिया
बाबा बिभूत लेलखिन जे लगाय
हौ गेरूआ रंग जे बस्तर अनरूपिया
अंग मे दैव लेलखिन जे लगाय
मांझे आबली लिलार मे निरमोहिया
कैए लेलखिन तिलक ने हौ
तेरह ताग जनउआ गोसांइ हा
कन्हा पर जे लेलखिन हौ लटकाय
आ हौ साब नीक पोथिया छलिया गोसांइ जी

बाबा बगली मे लेलखिन जे लगाय
मधुरी बोल हौ बोलैए गोसांइ बाबा
चलू चलू हौ बीर पबनबीर
चलू बरैला–सन हौ च'र

बाट जे धेने पबनबीर
आबै छै बरैला–सन हौ च'र
हौ आगू जे आगू रामक दूत पबनबीर
पाछू दुलरूआ बाबू कालीदास
आ हौ घड़िये छन पलक मे नारायन
जूमि गेलै बरैला–सन हौ च'र

सुनह सुनह हौ जोतिक दुलरुआ
सूनि लैह सबद हौ हमार
आ हौ करह करह जोतिक खेलौनमा
कैए लेहो भेंट हौ मुलकात

बेर सँ जे कुबेरिया भेलै हौ बाबा भोग मे
बेर के लौटनिञा लौटी गेल
देब–पितर मोर भूखल छै हौ बाभन
भुखलै छै हौ पूत्र सन के सुग्ग'र
केना हम्मे मिलबह हौ बाभन
केना करबह भेंट ओ मुलकात

धरती के हम देब छियै ब्राह्मनदेब
सेहो तोहर मुलकात लेली ठाढ़
धरम केर माया तोरा छौ हे हौ जोतिक
कैए लेहो भेंट ओ मुलकात
आ हो गछी लेहो धरमक तूं बेबहार

हम्में हे हौ जातिक ओछ जाति ब्राह्मन जी
छीयै जे हम डोम हौ धरिकार
सुग्गर–मांकड़ के गोस हम्में खेलियै हे हौ बाबा

हम्में आ हौ पोंपीपुर न'ग'र
केना गछबह बाबू हौ ब्राह्मन जी
केना गछबह धरमक हौ बेबहार

जाती के फिकिर नै तूं करह हे हौ जोतिक
माया केरी रूप जे अपरूप
धरम केर मतिया बाबू तोरे मे हे दुलरुआ
तेरह तागक बाभन यै ने बेकार हौ ने
मन के संताप तोहें तियागह हे हौ दुलरुआ
पथ गछह बरैला–सन हौ च'र

सत करह तूं पहिने हे हौ बिपरा
सत करह ने बरैला–सन हौ च'र

एक सत जे करै छियह दुलरुआ
सत दोसर जे तोहरे संग मे आइ
हौ तेसर सत जे करै छी हौ जोतिक
हम्में तोहर संग मे हौ साथ
सत सँ जँ बेसत हेबै हौ जोतिक
हम्मर धरम जेतै हौ बेरबाद

सूनह सूनह हे हौ बाबू ब्राह्मन जी
सूनि लेहो लिलसा हे हौ हमार
तोरहि सन के काया बाबा बिपरा
हमरा देहो बाबा हे हौ निरमाय
तब हम्में गछबह बाबा बिपरा
गछबह हे हौ तोहर जे बेबहार

जेहने काया हम्मर छै जोतिक हौ
ओहने देबह तोहर हौ निरमाय

पथ गछह हौ बाबू जोतिक
पथ गछह बरैला–सन हौ च'र

।। जोतिक : केदली बोन हौ बास ।।

कंचन–काया तोड़ि कए हौ गोसांइ जी
कैए देलकै कोढ़िया के हौ शरीर
उठलो क'ल नै हौ आब
बैठलो क'ल नै हौ आब
अरबे –अरबे फोका होइ छै नारायन
चलै शरीर सँ अगिनिया केरी हौ बान
नैना सँ नोर जे गिरै छै जोतिक कैँ
बाबा पोंपीपुर हौ न'ग'र
कानिज्ञे हौ कानि कए शब्दैए बाबू जोतिक
आमा कैँ कहैए समुझाय

बाभन नै ऊ रहौ हे गे आमा
रहौ दुलरुआ बाबू कालीदास
गै दैब केरी फभकी मे पड़ि गेलियै आमा
मैयो हे गै पोंपीपुर न'ग'र

बारह बरख के लिखनी लिखलकै हे गै आमा
दैब हमरा कदली बोन गै बास
बिन अन्न आ जल के गै आमा
बिन जूरी के गै बिन छाहरि केरी गै बास
धरमक कौल हम्में पुरबै ले' गै आमा
चलि जेबै केदली बोन गै बास
जैनी के बेरिया गै आमा
हीतमन समाज कैँ गै बजा

हमरा तोहें मरै दैह जोतिक हौ
मुख मे अगिया दिहो लगाय

तब तूं जइह जोतिक हौ
धरम केरी कौल जे हौ पुराय
उसर भूत जे हम होबै जोतिक हौ
बाबू हे हौ पोंपीपुर जे न'ग'र
बत्तीसो सूआ दूध हम्में पियेलियह हौ जोतिक
साड़ि लेलियै सोइरीघर मे जाय
दूधहि के दाम तूं चुकाय दै हौ जोतिक
तब जइह केदली बोन हौ बास

दूनू मूका मारैए मन्दोदरि
छाती मारै मैयो अज गे मारि
कानए लागले हाबी हाबी जोतिक केरी आमा
कानैए गै रोदना हौ पसारि
कानिञे जे कानि कए गै आमा
कहैए जे दैब कैं समुझाय

मांगल–चांगल हमरा देलहो ने गोसांइ हौ
देलहक तूंहे एके बेटा जोतीक
ऊहो बेटा कैं आइ हरि लेलह गोसांइ हौ
केकरा देखि कए बान्हबै हौ धैरज

डेरा–डेरा दौड़ैए जोतिक केरी आमा
हितमन कँ कहैए हौ समुझाय
सूनह सूनह हीतमन समाज हौ
सूनि लेहो परेम के हौ बात
हौ हमरो जे बेटा जोतिक, समाज हौ
जाइए केदली बोन हौ बास
मांगै छह जे भेंट–मुलकात समाज हौ
चलह चलह हम्मर हे हौ दुआरि

जाही दिन मे बेटा के सुदीन रहौ गे आमा
सन्मुख रहौ दाता. हौ निरायजन
मैयो पोंपीपुर गे न'ग'र

निरधन कैँ जे धन देलकौ बेटा तोहर
मरोछनी कैँ जे कोखिया
निपुत्र कैँ जे पुत्र देलकौ गै आमा
तहिया तूं नै कहलें चलह चलह हौ हितमन
आइ किऐ जेबौ तोहर हे गे दुआर ?
आइ जब दीन तोर दुरदिन भेलौ आमा
दैब जे बेमुख भेलौ बाबू कालीदास
कंचन–काया कैँ हरि लेलकौ आमा
काया केलकौ कोढ़िया के गै शरीर
कोढ़ियो गैत पर दैब लिखलकौ गे आमा
लिखिये देलकौ बारह बरस बनबास
चीन्हल लोक जे अनचिन्ह केलकौ गे आमा
हितमन कए देलकौ गै बीरान
भने कोढ़िया जाइ छौ गे आमा
जाइ छै गामक हे गे बलाय

नैना नोर जे ढरै छै गे आमा
भूम पर गिरैए मैयो ओंघराय
कलपिए कलपि कए कानै छै गे आमा
मैयो हे गै पोंपीपुर हे न'ग'र...

।। कोइली–जोतिक–संवाद ।।

हमरा तेजि कए भागल जाइ छह गुरू
जाइ छह बिपत के बन हौ गुरू बास
बड़ा ही जतन सँ हमरा पोसलह हौ गुरू
पोंपी मे दूधभात हमरा खिलाय
आ हौ तोहरे जे संग हमहूँ जैबह हौ गुरू
करबह हमहूँ केदली बोन हौ बास
भूख तोरा लागतह हौ गुरू बाबा
दूबि तोड़ि मुँह मे देबह लगाय
चोंच सँ जे जल आनि कए हौ गुरू

मुख मे देबह हम्में तोरा पियाय
चढ़ैत मास बैसाख जे हौ गुरू
होइ छै रोहनित्रा–सन हो नछत्र
तर धरती तबिये जाइ छै हौ गुरू
ऊपर तबिये जाइ छै असमान
कोढ़िया गैत मे रौदा लागतह गुरू
छन छन करतह तोहर हे हौ शरीर
जाहाँ जाहाँ रौदा तोरा लागतह हौ गुरू
पँखिया सँ करबह जूरी छाँह
तोरे सेवा कए कए मरबै हम्में गुरू
हमहूँ केदली बोन मे हौ बास

गे कोइली ऽ ऽ ऽ
नै जो नै जो संग–साथ हमर गै कोइली
सेवा कर तूं आमा केर गै ठाम
बिना बेटा के ऊआलिस के जे कोइली
छोड़लहुँ लखिमा बूढ़ी गे माय
बिपती के बोन जे भागल जाइ छी कोइली
हम्में केदली बोन के गै बास
बेटा के बदला तूं बेटा बनिहें गे कोइली
आमा के तूं पोंपीपुर न'ग'र
जत्ते करबें आमा के तूं सेवा के कोइली
तते सुफल हैत केदली केर गै बोन

हौ गुरू महराज ऽ ऽ ऽ
आमा के देखबैया दैब छै पितर छै
तोरा नै छह अप्पन कोइ हौ समाङ
चीन्हल लोक तोरा अनचीन्ह केलकह गुरू
आमा केँ छै बाबू कालीदासक आस
बोन केरी हम पंछी छी हौ गुरू
हम्में नै छी लोक आहौ मनूख
बिपती के बेर नै हम छोड़बह हौ गुरू
जैबह तोरे संग केदली बोन

तोरा जे दरसन बेगर हौ गुरू बाबा
पोंपी मे तेजि देलक [illegible] परान
ई बध लागतह तोरे हौ गुरू महराज

·हमहूँ जैबह केदली बोन हौ बास
मधुरी जे बोलिया कोइली बोललै रोदन मे
एतना बोलैत गेलै हौ लटुआय
खोलिये जे देलकै पिंजरबा जोतिक हौ
कोइली कँ साथ लेलखिन हौ लगाय

सौजन्य : श्री बद्री पंडित पँजियार (बनगाँव), श्री बीजो मरर (सतरबार), श्री भूमी सदा (महिषी) तथा मध्यप्रदेश लोककला परिषद्, बाणगंगा रोड, भोपाल।

देशज-2001
संपादक- तारानंद वियोगी, अविनाश